भगत रविदास – सबद २८

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥

रागु बिलावलु, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ८५८

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ कृपा तुमारी ॥१॥
तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥१॥

सार: सार्वभौमिक नियम समानता पर आधारित हैं, वह पद, वंश या सामाजिक हैसियत को नहीं देखते। यह नियम उन लोगों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं जिनके विचार और कर्म सार्वभौमिकता के अनुरूप होते हैं। चाहे कोई व्यक्ति शिक्षित हो या अशिक्षित, अमीर हो या गरीब, स्पष्टता के रास्ते सभी के लिए खुले हैं जो भी अपने भीतर झांकता है उसे यह मार्ग मिल जाता है। यह सत्य बताता है कि विवेक और आंतरिक स्वतंत्रता जन्म या विरासत की देन नहीं हैं, वह एकत्व की खोज से अर्जित होते हैं।

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
मेरी निर्धनता देखकर बहुत से लोग हँसते हैं, यही सच्चाई है जिसका मैं सामना करता हूँ। यह सामाजिक न्याय की सतही प्रकृति को उजागर करता है जहाँ मनुष्य का मूल्य केवल बाहरी दिखावे और वित्तीय स्थिति से आँका जाता है।

असट दसा सिधि कर तलै सभ कृपा तुमारी ॥१॥

फिर भी, अठारह अलौकिक सिद्धियाँ मेरी हथेली में हैं, यह सार्वभौमिक चेतना की कृपा से है। यह दर्शाता कि जहाँ समाज धन को संकीर्ण रूप से देखता है वहीं एक प्रबुद्ध मन, जाग्रत चेतना को विनम्रता और आत्म-बोध में निहित आध्यात्मिक समृद्धि मानता है। (१)

तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥
आप जानते हैं कि 'स्वयं' का अहंकार कुछ भी नहीं है, सर्वव्यापी वास्तविकता की समझ सांसारिक भय को तोड़ देती है। यह इस बात की विनम्रता को दर्शाता है कि अलग-थलग स्वयं द्वैत और भिन्नता का भय पैदा करता है।

सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥
सभी जीवित प्राणी सर्वव्यापी चेतना की शरण में हैं और अपने-अपने कर्मों को पूरा कर रहे हैं। यह दर्शाता है कि सभी अस्तित्व एक साँझा जीवन स्रोत से उत्पन्न होते हैं, प्रत्येक अपनी अनूठी स्थिति को मूर्त रूप देता है और पूर्णता को समृद्ध करता है। (१)(विराम)

जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
जो सर्वव्यापी चेतना की शरण में रहते हैं, उन पर कोई बोझ नहीं होता। यह उस गहन शांति को दर्शाता है जो अहं-संचालित मानसिकता को छोड़ने से उपजने वाली आंतरिक मुक्ति से पैदा होती है।

ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥
ऊँचे और नीचे सभी, सर्वव्यापी चेतना के माध्यम से कष्टदायक संसार से पार हो जाते हैं। यह सार्वभौमिक नियमों की समानतावादी प्रकृति की ओर इशारा करता है क्योंकि कोई भी जो इसके साथ जुड़ता है, वह अपनी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना मन की जटिलताओं को पार कर सकता है। (२)

कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥

रविदास कहते हैं, अवर्णनीय को अनेक तरीकों से क्यों परिभाषित किया जाए? यह अनंत चेतना के सार को समझने में धार्मिक बहसों की व्यर्थता को उजागर करता है जिसे शब्दों तक सीमित रखने के बजाय अनुभव किया जाना चाहिए।

जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥१॥
आप ठीक वैसे ही हो जैसे आप हो। क्या आपकी प्रशंसा की जा सकती है? यह बताता है कि सार्वभौमिक वास्तविकता जैसी है वैसी ही स्थिर है, हमारी प्रशंसा से अछूती, हमारे संदेह से अप्रभावित और उसे स्वीकृति, औचित्य या महिमामंडन की ज़रूरत नहीं है। (३)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास सांसारिक निर्णयों और आंतरिक सत्य के बीच तुलना करते हैं और इस विचार को खारिज करते हैं कि सामाजिक राय ही सच्चाई तय करती है। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सच्ची समृद्धि आत्म-नियंत्रण से आती है जो ऐसी दौलत देती है जिसे कोई छीन नहीं सकता। वह इस विचार का समर्थन करते हैं कि विनम्रता भीतरी स्वतंत्रता का एक रूप है जो अहं को कम करती है और एकता को बढ़ावा देती है। जब हम ओहदा पाने के बजाय जागरूकता से, अपने असली स्वरूप से जुड़ते हैं तब ज़िंदगी का बोझ हल्का हो जाता है। इस जुड़ाव में, गरिमा सबके लिए होती है और सामाजिक दर्जे की परवाह किए बिना यह सभी को सहजता से मिलती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com